डॉ. नगेन्द्र

जन्म और मृत्यु - डॉ. नगेंद्र शुकलोत्तर युग के प्रमुख निबंधकार हैं | डॉ. नगेंद्र का जन्म- 9 मार्च, 1915 को अलीगढ़, उत्तर प्रदेश में हुआ था| इनका 27 अक्टूबर 1999 को नई दिल्ली में उनका निधन हुआ।

पुरस्कार -साहित्य अकादमी पुरस्कार ('रस-सिद्धांत' के लिए 1965 में)
– इन्होंने 1948 ईस्वी में रीतिकाव्य की भूमिका और महाकवि देव विषय पर शोध उपाधि प्राप्त की थी|

कार्यक्षेत्र - डा. नगेंद्र का साहित्यिक जीवन कवि के रूप में आरंभ होता है। सन 1937 ई. में उनका पहला काव्य संग्रह 'वनबाला' प्रकाशित हुआ। इसमें विद्यार्थीकाल की गीति-कविताएँ संग्रहीत हैं। एम.ए. करने के बाद वे दस वर्ष तक दिल्ली के कामर्स कॉलेज में अंग्रेज़ी के अध्यापक रहे। पाँच वर्ष तक 'आल इंडिया रेडियो' में भी कार्य किया। बाद में वे दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में अध्यक्ष पद से निवृत्त होकर वहीं रहने लगे थे।

प्रमुख रचनाएं :-
निबंध /आलोचना:-

- 1938 सुमित्रानंदन पंत (पहली आलोचनात्मक पुस्तक)
- 1939 साकेत: एक अध्ययन
- 1944 विचार और विवेचन(निबंध)
- 1949 आधुनिक हिंदी नाटक
- ·1949 विचार और अनुभूति(निबंध)
- 1949 रीति काव्य की भूमिका हिंदी साहित्य का इतिहास
- 1951 आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ
- 1955 विचार और विश्लेषण (निबंध)
- 1957 अरस्तू का काव्यशास्त्र
- 1961 अनुसंधान और आलोचना
- 1962 कामायनी के अध्ययन की समस्याएं
- 1964 रस-सिद्धांत (महत्त्वपूर्ण)
- 1966 आलोचक की आस्था (निबंध)
- 1969 आस्था के चरण (निबंध संग्रह)
- 1970 नयी समीक्षाः नये संदर्भ
- 1971 समस्या और समाधान
- 1973 हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास (दस भाग)
- 1979 मिथक और साहित्य
- 1982 साहित्य का समाज शास्त्र
- 1985 भारतीय समीक्षा और आचार्य शुक्ल की काव्य दृष्टि
- 1987 मैथलीशरण गुप्त : पुनर्मूल्यांकन

- 1990 प्रसाद और कामायिनी
- 1993 राम की शक्तिपूजा
- अभिनव भारती
- नाट्य दर्पण
- काव्य में उदात्त तत्व
- काव्य कला
- भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परंपरा चेतना के बिंब (निबंध)
- वीणापाणि के कम्पाउण्ड में (निबंध)
- हिंदी उपन्यास (निबंध)
- अर्द्धकथा-1988 (आत्मकथा)

विशेष :-

- ये रसवादी आलोचक माने जाते हैं|
- इनका साहित्यिक जीवन कवि के रूप में आरंभ होता है। सन 1937 ई. में उनका पहला काव्य संग्रह 'वनबाला' प्रकाशित हुआ|
- इन्होंने फ्रायड के मनोविश्लेषण शास्त्र के आधार पर नाटक और नाटककारों की आलोचनाएँ लिखीं है।
- डॉ. नगेन्द्र के निबन्धों की भाषा शुद्ध, परिष्कृत, परिमार्जित, व्याकरण सम्मत तथा साहित्यिक खड़ी बोली है।
- ये 'आगरा विश्वविद्यालय', आगरा से "रीतिकाल के संदर्भ में देव का अध्ययन" शीर्षक शोध प्रबन्ध पर शोध उपाधि से अलंकृत हुए थे।
- डॉ.नगेंद्र की शैली तर्कपूर्ण, विश्लेषणात्मक तथा प्रत्यायक है। यह सब होते हुए भी उसमें सर्वत्र एक प्रकार की अनुभूत्यात्मक सरसता मिलती है। वे अपने निबंधों और प्रबंधों को जब तक अपनी अनुभूति का अंग नहीं बना लेते तब तक उन्हें अभिव्यक्ति नहीं देते। अतः उनकी समीक्षाओं में विशेषरूप से निबंधों में भी सर्जना का समावेश रहता है।
- 'साहित्य-संदेश' में प्रकाशित उनके लेखों ने उनकी ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। उनकी तीन आलोचनात्मक कृतियाँ प्रकाशित हुईं - 'सुमित्रानंदन पंत' (1938ई.), 'साकेत- एक अध्ययन' (1939ई.) और 'आधुनिक हिंदी नाटक'(1940ई.)। पहली पुस्तक का पाठकों और आलोचकों के बीच खूब स्वागत हुआ। वे अंग्रेज़ी के श्रेष्ठ आलोचकों की कृतियों से प्रभावित थे और उन कृतियों की तरह ही वे उच्चस्तरीय समीक्षा-पुस्तक प्रस्तुत करना चाहते थे। 'साकेत-एक अध्ययन' पर इस मनोवृत्ति का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।
- 'आधुनिक हिंदी नाटक' में उनके आलोचक स्वरूप ने एक नया मोड़ लिया और वे फ्रायडीय मनोविज्ञान के क्षेत्र में आ गए। उन्होंने फ्रायड के मनोविश्लेषण शास्त्र के आधार पर नाटक और नाटककारों की आलोचनाएँ लिखीं। बाद में क्रोचे आदि के अध्ययन के फलस्वरूप उनका झुकाव सैद्धांतिक आलोचना की ओर हुआ। 'रीति-काव्य की भूमिका' तथा 'देव और उनकी कविता' (1949 ई. - शोध ग्रंथ) के

भूमिका भाग में भारतीय काव्य-शास्त्र पर विचार किया गया है, जिसमें उनके मनोविश्लेषण-शास्त्र के अध्ययन से काफ़ी सहायता मिली है।

- नगेंद्र पर भी शुक्ल जी का प्रभाव पड़ा। उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है कि रस-सिद्धांतों की ओर उनके झुकाव के मूल में शुक्ल जी का ही प्रभाव है। नगेंद्र जी काव्य में रस-सिद्धांत को अंतिम मानते हैं। इसके बाहर न तो वे काव्य की गति मानते है और न सार्थकता।

पंडित बालकृष्ण भट्ट

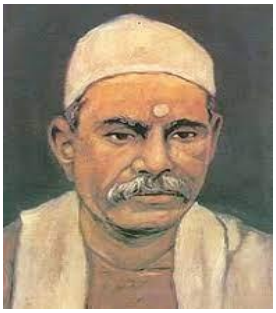

पंडित बालकृष्ण भट्ट 'भारतेंदु युग' के प्रमुख निबंधकार थे। हिन्दी के सफल पत्रकार, उपन्यासकार, नाटककार और निबंधकार भी थे।

पंडित बालकृष्ण भट्ट का जन्म 3 जून, सन 1844 इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था| और मृत्यु 20 जुलाई 1914 में हुआ था| बालकृष्ण भट्ट गद्य कविता के जनक रहे है। बालकृष्ण भट्ट एक नाटककार, पत्रकार, उपन्यासकार और निबन्धकार थे। भारतेंदु युग के प्रमुख निबंधकार रहें हैं| भट्ट जी ने निबन्ध, उपन्यास और नाटकों की रचना करके हिन्दी को एक समर्थ शैली प्रदान की। वे पहले ऐसे निबन्धकार थे, जिन्होंने आत्मपरक शैली का प्रयोग किया था। उन्होने 32 वर्ष तक **'हिन्दी प्रदीप'** का सम्पादन किया। **पंडित मदन मोहन मालवीय** और **राजर्षि पुरुषोतम दास टंडन** जैसी विभूतिया उनकी शिष्य रहे है। **भारतेंदु हरिश्चंद्र** की प्रेरणा से उन्होने **1877** में **हिन्दी वर्धिनी सभा** की स्थापना की । उनके छापे लेखों ने अंग्रेज़ नौकरशाही को नाराज किया। उन्हे चेतावनियां भी मिली। आखिर में उन्हे विवश होकर पत्रिका का चरित्र राजनीति से साहित्यिक करना पड़ा। अत्यंत व्यस्त रहते हुए भी उन्होने दस – बारह पुस्तके भी लिखी। बालकृष्ण भट्ट को हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेज़ी, बंगला और फ़ारसी आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान था।

शिक्षा

बालकृष्ण भट्ट की प्रारंभिक शिक्षा घर से ही प्राप्त हुई। उन्हे घर पर संस्कृत की शिक्षा दी गयी और 15-16 वर्ष की अवस्था तक उनका यही क्रम चलता रहा। इसके बाद उन्होंने अपनी माता के आदेशानुसार **स्थानीय मिशन के स्कूल** में **अंग्रेज़ी** पढना शुरू किया और दसवीं कक्षा तक अध्ययन किया। विद्यार्थी जीवन में इन्हें बाईबिल परीक्षा में कई बार पुरस्कार भी प्राप्त हुए। मिशन स्कूल छोड़ने के बाद वे दोबारा संस्कृत, व्याकरण और साहित्य का अध्ययन करने लगे। आपके पिता जी व्यापारी थे| आपकी माता का नाम पार्वतीदेवी था| और पत्नी का नाम श्रीमति रमादेवी था | आपकी 4 संतान मूलचंद भट्ट, महादेव भट्ट, लक्ष्मीकान्त भट्ट, जनार्दन भट्ट है |

कार्य क्षेत्र

कुछ समय के लिए बालकृष्ण भट्ट **'जमुना मिशन स्कूल'** में संस्कृत के अध्यापक के रूप में किया, लेकिन अपने धार्मिक विचारों के कारण उन्हें पद त्याग करना पड़ा। विवाह हो जाने पर जब उन्हें अपनी बेकारी खलने लगी, तब वे व्यापार करने की इच्छा से कलकत्ता भी गए, परन्तु वहाँ से जल्दी ही लौट आये और संस्कृत साहित्य के अध्ययन तथा हिन्दी साहित्य की सेवा में जुट गए। वे स्वतंत्र रूप से लेख लिखकर

हिन्दी साप्ताहिक और मासिक पत्रों में भेजने लगे तथा कई वर्ष तक प्रयाग में संस्कृत के अध्यापक रहे। भट्टजी प्रयाग से **'हिन्दी प्रदीप'** मासिक पत्र का निरंतर घाटा सहकर 32 वर्ष तक उसका सम्पादन करते रहे। 'हिन्दी प्रदीप' बंद होने के बाद उन्होने **काशी नागरी प्रचारिणी सभा** द्वारा आयोजित **हिंदी शब्दसागर** के संपादन में भी उन्होंने बाबू श्याम सुंदर दास तथा शुक्ल जी के साथ कार्य किया, पर अस्वस्थता के कारण उन्हें यह कार्य भी छोड़ना पड़ा।

हिन्दी साहित्य में बालकृष्ण भट्टजी का स्थान-

गद्य काव्य की रचना सर्वप्रथम बालकृष्ण भट्ट ने प्रारंभ की थी। उनसे पूर्व तक हिन्दी में गद्य काव्य का नितांत अभाव था। बालकृष्ण भट्ट का हिन्दी के निबन्धकारों में महत्त्वपूर्ण स्थान है। निबन्धों के प्रारंभिक युग को निःसंकोच भाव से **भट्ट युग** के नाम से अभिहित किया जा सकता है। व्यंग्य विनोद संपन्न शीर्षकों और लेखों द्वारा एक ओर तो भट्टजी प्रताप नारायण मिश्र के निकट हैं और गंभीर विवेचन एवं विचारात्मक निबन्धों के लिए वे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निकट हैं। भट्टजी अपने युग के न केवल सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार थे, अपितु इन्हें सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य में प्रथम श्रेणी का निबन्ध लेखक माना जाता है। उन्होंने साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, दार्शनिक, नैतिक और सामयिक आदि सभी विषयों पर विचार व्यक्त किये हैं। इन्होंने तीन सौ से अधिक निबन्ध लिखे हैं। उनके निबन्धों का कलेवर अत्यंत संक्षिप्त है तथा तीन पृष्ठों में ही समाप्त हो जाते हैं। उन्होंने मूलतः विचारात्मक निबन्ध ही लिखे हैं और इन विचारात्मक निबन्धों को चार श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है-

- व्यावहारिक जीवन से सम्बंधित।
- साहित्यिक विषयों से समबन्धित।
- सामयिक विषयों से सम्बंधित।
- हृदय की वृतियों पर आधारित।

कृतियाँ

भट्टजी 'भारतेंदु युग' की देन थे और भारतेंदु मंडली के प्रधान सदस्य थे। प्रयाग में उन्होंने **'हिन्दी प्रवर्द्धिनी'** नामक सभा की स्थापना की थी और **'हिन्दी प्रदीप'** नामक पत्र प्रकाशित करते रहे। इसी पत्र में इनके अनेक निबन्ध दृष्टिगोचर होते हैं। 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' प्रयाग ने इनके कुछ निबन्धों का संग्रह **'निबन्धावली'** नाम से प्रकाशित भी करवाया था। उन्होने अत्यंत व्यस्त रहते हुए भी दस – बारह पुस्तके भी लिखी। वे इस प्रकार है –

निबन्ध संग्रह - साहित्य सुमन, भट्ट निबन्धावली।

उपन्यास - नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान एक सुजान।

नाटक - दमयंती स्वयंवर, चंद्रसेन, पद्मावती, शिशुपाल वध , सीता वनवास , मेघनाद वध |

अनुवाद- भट्ट जी ने बंगला तथा संस्कृत के नाटकों के अनुवाद भी किए जो इस प्रकार है – वेणीसंहार, मृच्छकटिक, पद्मावती।

भाषा-

भाषा की दृष्टि से अपने समय के लेखकों में भट्ट जी का स्थान बहुत ऊपर है। उन्होंने अपनी रचनाओं में यथाशक्ति शुद्ध हिंदी का प्रयोग किया। भावों के अनुकूल शब्दों का चुनाव करने में वे बड़े कुशल थे। कहावतों और मुहावरों का प्रयोग भी उन्होंने सुंदर ढंग से किया है। भट्ट जी की भाषा में जहाँ तहाँ पूर्वीपन की झलक मिलती है। जैसे- समझा-बुझा के स्थान पर समझाय-बुझाय लिखा गया है। बालकृष्ण भट्ट

की भाषा को दो कोटियों में रखा जा सकता है। प्रथम कोटि की भाषा तत्सम शब्दों से युक्त है। द्वितीय कोटि में आने वाली भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ-साथ तत्कालीन उर्दू, अरबी, फारसी तथा ऑग्ल भाषीय शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। वह हिन्दी की परिधि का विस्तार करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने भाषा को विषय एवं प्रसंग के अनुसार प्रचलित हिन्दीतर शब्दों से भी समन्वित किया है। आपकी भाषा जीवंत तथा चित्ताकर्षक है। इसमें यत्र-तत्र पूर्वी बोली के प्रयोगों के साथ-साथ मुहावरों का प्रयोग भी किया गया है, जिससे भाषा अत्यन्त रोचक और प्रवाहमयी बन गई है।

शैली

बालकृष्ण भट्ट की लेखन शैली को दो कोटियों में रखा जा सकता है। प्रथम कोटि की शैली को परिचयात्मक शैली कहा जा सकता है। इस शैली में उन्होंने कहानियाँ और उपन्यास लिखे हैं। द्वितीय कोटि में आने वाली शैली गूढ़ और गंभीर है। इस शैली में भट्ट जी को अधिक नैपुण्य प्राप्त है। उन्होंने 'आत्म-निर्भरता' तथा 'कल्पना' जैसे गम्भीर विषयों के अतिरिक्त, 'आँख', 'नाक' तथा 'कान' आदि अति सामान्य विषयों पर भी सुन्दर निबन्ध लिखे हैं। आपके निबन्धों में विचारों की गहनता, विषय की विस्तृत विवेचना, गम्भीर चिन्तन के साथ एक अनूठापन भी है। यत्र-तत्र व्यंग्य एवं विनोद उनकी शैली को मनोरंजक बना देता है। उन्होंने हास्य आधारित लेख भी लिखे हैं, जो अत्यन्त शिक्षादायक हैं। भट्ट जी का गद्य, गद्य न होकर गद्यकाव्य-सा प्रतीत होता है। वस्तुत: आधुनिक कविता में पद्यात्मक शैली में गद्य लिखने की परंपरा का सूत्रपात बालकृष्ण भट्ट जी ने ही किया था। निबंधों में आत्मपरकता, व्यक्तित्व प्रधानता एवं कलात्मक शैली कका प्रयोग हुआ है| इन्होंने 1000 से भी अधिक निबंध लिखें हैं |

वर्णनात्मक शैली

वर्णनात्मक शैली में बालकृष्ण भट्ट जी ने व्यावहारिक तथा सामाजिक विषयों पर निबन्ध लिखे हैं। जन साधारण के लिए भट्ट जी ने इसी शैली को अपनाया। इस शैली की भाषा सरल और मुहावरेदार है। वाक्य कहीं छोटे और कहीं बड़े हैं।

विचारात्मक शैली

भट्ट जी द्वारा गंभीर विषयों पर लिखे गए निबन्ध इसी शैली के अंतर्गत आते हैं। तर्क और विश्वास, ज्ञान और भक्ति, संभाषण आदि निबन्ध विचारात्मक शैली के उदाहरण हैं। इस शैली की भाषा में संस्कृत के शब्दों की अधिकता है।

भावात्मक शैली

इस शैली का प्रयोग बालकृष्ण भट्ट ने साहित्यिक निबन्धों में किया है। इसे उनकी प्रतिनिधि शैली कहा जा सकता है। इस शैली में शुद्ध हिन्दी का प्रयोग हुआ है। भाषा प्रवाहमयी, संयत और भावानुकूल है। इस शैली में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का प्रयोग भी हुआ है। अलंकारों के प्रयोग से भाषा में विशेष सौंदर्य आ गया है। भावों और विचार के साथ कल्पना का भी सुंदर समन्वय हुआ है। इसमें गद्य काव्य जैसा आनंद होता है।

व्यंग्यात्मक शैली

इस शैली में हास्य और व्यंग्य की प्रधानता है। विषय के अनुसार कहीं व्यंग्य अत्यंत मार्मिक और तीखा हो गया है। इस शैली की भाषा में उर्दू शब्दों की अधिकता है और वाक्य छोटे-छोटे हैं।

शिवपूजन सहाय

जन्म- 9 अगस्त 1893, शाहाबाद(बिहार),; मृत्यु- 21 जनवरी 1963, पटना|

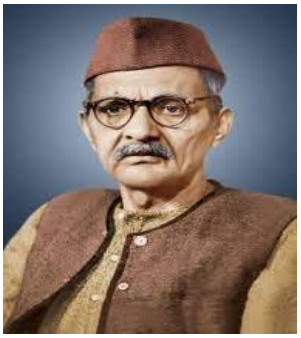

हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार, कहानीकार, सम्पादक और पत्रकार थे। उन्हें साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में सन 1960 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।

शिवपूजन सहाय का जन्म सन् 1893 में गाँव उनवाँस, शिला भोजपुर (बिहार) में हुआ। उनके बचपन का नाम भोलानाथ था। दसवीं की परीक्षा पास करने के बाद उन्होंने बनारस की अदालत में नकलनवीस की नौकरी की। बाद में वे हिंदी के अध्यापक बन गए। असहयोग आंदोलन के प्रभाव से उन्होंने सरकारी नौकरी से त्यागपत्रा दे दिया। शिवपूजन सहाय अपने समय के लेखकों में बहुत लोकप्रिय और सम्मानित व्यक्ति थे। उन्होंने जागरण, हिमालय, माधुरी, बालक आदि कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं का संपादन किया। इसके साथ ही वे हिंदी की प्रतिष्ठित पत्रिका मतवाला के संपादक-मंडल में थे। सन् 1963 में उनका देहांत हो गया।

इनके लिखे हुए प्रारम्भिक लेख 'लक्ष्मी', 'मनोरंजन' तथा 'पाटलीपुत्र' आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित होते थे। शिवपूजन सहाय ने 1934 ई. में 'लहेरियासराय' (दरभंगा) जाकर मासिक पत्र 'बालक' का सम्पादन किया। स्वतंत्रता के बाद शिवपूजन सहाय बिहार राष्ट्रभाषा परिषद के संचालक तथा बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से प्रकाशित 'साहित्य' नामक शोध-समीक्षा प्रधान त्रैमासिक पत्र के सम्पादक थे।

वे मुख्यतः गद्य के लेखक थे। देहाती दुनिया, ग्राम सुधर, वे दिन वे लोग, स्मृतिशेष आदि उनकी दर्जन भर गद्य-कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। शिवपूजन रचनावली के चार खंडों में उनकी संपूर्ण रचनाएँ प्रकाशित हैं। उनकी रचनाओं में लोकजीवन और लोकसंस्कृति के
प्रसंग सहज ही मिल जाते हैं।

करियर

1921 में अपनी प्रारंभिक शिक्षा और हिंदी भाषा के शिक्षक के रूप में एक छोटी सी अवधि के बाद, कोलकाता गए और 1923 में मतवाला के संपादक के रूप में शामिल हुए। 1924 में उन्होंने माधुरी के संपादकीय विभाग में शामिल होने के लिए लखनऊ चले गए। जहां उन्होंने प्रसिद्ध हिंदी लेखक मुंशी प्रेमचंद के साथ काम किया और अपने रंगभूमि और कुछ अन्य कहानियों का संपादन किया।

1925 में, वह कलकत्ता लौटे और अल्पकालीन पत्रिकाओं जैसे समनवे, मौजी, गोलमाल, उपन्यास तरंग को संपादित करने में कामयाब रहे। अंत में, सहायक ने फ्रीलांस एडिटर के रूप में काम करने के लिए वाराणसी (के- i) में स्थानांतरित किया। 1931 में एक छोटी अवधि के लिए, वह गंगा को संपादित करने के लिए भागलपुर के पास सुल्तानगंज गए। हालांकि, वे 1 9 32 में वाराणसी लौटे, जहां उन्हें जगतारन को संपादित करने के लिए कमीशन किया गया, जो जयशंकर प्रसाद और दोस्तों के उनके सर्किल द्वारा पखवाड़े

एक साहित्यिक पखवाड़े। सहाय ने एक बार फिर प्रेमचंद के साथ काम किया। वह भी नागरी प्रचारणी सभा के एक प्रमुख सदस्य और वाराणसी में इसी तरह के साहित्यिक हलकों में बन गए|

1935 में, वह लाहारीया सराय (दरभंगा) के लिए बालाक और आचार्य राममोचन सरन के स्वामित्व वाले पुस्टक भंडार के अन्य प्रकाशनों के संपादक के रूप में काम करने गए। 1939 में, उन्होंने हिंदी भाषा के प्रोफेसर के रूप में राजेंद्र कॉलेज, छपरा में शामिल हो गए।

लेखन कार्य

शिवपूजन सहाय की लिखी हुई पुस्तकें विभिन्न विषयों से सम्बद्ध हैं तथा उनकी विधाएँ भी भिन्न- भिन्न हैं। 'बिहार का बिहार' बिहार प्रान्त का भौगोलिक एवं ऐतिहासिक वर्णन प्रस्तुत करती है।

विभूति' में कहानियाँ संकलित हैं। 'देहाती दुनियाँ'(1926 ई.) प्रयोगात्मक चरित्र प्रधान औपन्यासिक कृति है। इसकी पहली पाण्डुलिपि लखनऊ के हिन्दू

मुस्लिम दंगे में नष्ट हो गयी थी। इसका शिवपूजन सहाय जी को बहुत दु:ख था। उन्होंने दुबारा वही

पुस्तक **फिर** लिखकर प्रकाशित करायी, किन्तु उससे शिवपूजन सहाय को पूरा संतोष नहीं हुआ। शिवपूजन सहाय कहा करते थे कि "पहले की लिखी हुई चीज़ कुछ और ही थी।

""ग्राम सुधार' तथा 'अन्नपूर्णा के मन्दिर में' नामक दो पुस्तकें ग्रामोद्धार

सम्बन्धी लेखों के संग्रह हैं। इनके अतिरिक्त 'दो पड़ी' एक हास्यरसात्मक कृति है, 'माँ के सपूत'

बालोपयोगी तथा 'अर्जुन' और 'भीष्म' नामक दो पुस्तकें महाभारत के दो पात्रों की जीवनी के रूप में लिखी गयी हैं।

शिवपूजन सहाय ने अनेक पुस्तकों का सम्पादन भी किया, जिनमें 'राजेन्द्र अभिनन्दन ग्रन्थ' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। 'बिहार राष्ट्रभाषा परिषद',(पटना) ने इनकी विभिन्न रचनाओं को अब तक चार खण्डों में 'शिवपूजन रचनावली' के नाम से प्रकाशित किया है।

हिन्दी साहित्य मे शिवपूजन सहाय का विशिष्ट स्थान-

शिवपूजन सहाय का हिन्दी के गद्य साहित्य में एक विशिष्ट स्थान है। उनकी भाषा बड़ी सहज थी। इन्होंने उर्दू के शब्दों का प्रयोग धड़ल्ले से किया है और प्रचलित मुहावरों के सन्तुलित उपयोग द्वारा लोकरुचि का स्पर्श करने की चेष्टा की है। शिवपूजन सहाय ने कहीं-

कहीं अलंकार प्रधान अनुप्रास बहुल भाषा का भी व्यवहार किया है और गद्य में पद्य की सी छटा उत्पन्न करने की चेष्टा की है। भाषा के इस पद्यात्मक स्वरूप के बावज़ूद शिवपूजन सहाय के गद्य लेखन में गाम्भीर्य का अभाव नहीं है। शिवपूजन सहाय की शैली ओज-गुण सम्पन्न है ।

कृतियाँ

कथा एवं उपन्यास

- वे दिन वे लोग - 1963
- कहानी का प्लॉट - 1965
- मेरा जीवन - 1985
- स्मृतिशेष - 1994
- हिन्दी भाषा और साहित्य - 1996
- ग्राम सुधार - 2007
- देहाती दुनिया - 1926
- विभूति - 1935

- माता का आँचल
- शिव पूजन सहाय साहित्य समग्र(10 खंड) -2011
- शिव पूजन सहाय रचनावली (4 खंड)

सम्पादन कार्य

- द्विवेदी अभिनन्दन ग्रन्थ - 1933
- जयन्ती स्मारक ग्रन्थ - 1942
- अनुग्रह अभिनन्दन ग्रन्थ - 1946
- राजेन्द्र अभिननदन ग्रन्थ - 1950
- आत्मकथा
- रंगभूमि (1925)
- समन्वय (1925)
- मौजी
- गोलमाल
- जागरण (1932)
- बालक (1934)
- मतवाला (1923)
- हिन्दी साहित्य और बिहार (1960 - I & 1963 -II)
- माधुरी (1924)

हरिशंकर परसाई (सन् 1924-1995 ई.)

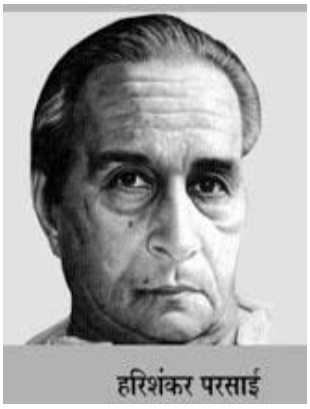
हरिशंकर परसाई

जीवन-परिचय- हरिशंकर परसाई का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जनपद में इटारसी के निकट स्थित जमानी नामक ग्राम में 22/08/1924 ई. को हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिखा से स्नातक तक की शिक्षा मध्य प्रदेश में हुई। तदुपरान्त इन्होंने नागपूर विश्वविद्यालय से एम.ए. हिन्दी की परीक्षा उत्तीर्ण की। इनके पश्चात् कुछ वर्षों तक इन्होंने अध्यापन-कार्य किया। इन्होंने बाल्यावस्था से ही कला एवं साहित्य में रुचि लेना प्रारम्भ कर दिया था। वे अध्यापन के साथ-साथ साहित्य-सृजन भी करते रहे। दोनो कार्य साथ-साथ न चलने के कारण अध्यापन-कार्य छोड़कर साहित्य-साधना को ही इन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। इन्होंने जबलपुर में ***'वसुधा'*** नामक ***पत्रिका के सम्पादन*** एवं प्रकाशन का काय्र प्रारम्भ किया, लेकिन अर्थ के अभाव के कारण यह बन्द करना पड़ा। इनके निबन्ध और व्यंग्य समसामयिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकशित होते रहते थे, लेकिन इन्होंने नियमित रूप से धर्मयुग और साप्ताहिक हिन्दुस्तान के लिए अपनी रचनाएँ लिखीं। 10 अगस्त 1995 ई. को इनका स्वर्गवास हो गया। हिन्दी गद्य-साहित्य के व्यंग्यकारों में हरिशंकर परसाई अग्रगण्य थे। इनके व्यंग्य-विषय सामाजिक एवं राजनीतिक रहे। व्यंग्य के अतिरिक्त इन्होंने साहित्य की अन्य विधाओं पर भी अपनी लेखनी चलाई थी, परन्तु इनकी प्रसिद्धि व्यंग्याकार के रूप में ही हुई।

कृतियां

परसाई जी की प्रमुख कृतियाँ है।

- **कहानी-संग्रह- 1-**हँसते हैं रोते हैं, 2- जैसे उनके दिन फिरे, 3- भोलाराम का जीव
- **उपन्यास-** 1- रानी नागफनी की कहानी, 2-तट की खोज, 3-ज्वाला और जल
- **निबंध-संग्रह-** तब की बात और थी, भूत के पाँव पीछे, बेईमान की परत, पगडंडियों का जमाना, सदाचार ताबीज, शिकायत मुझे भी हे, और अन्त में, तिरछी रेखाएँ, ठिठुरता गणतन्त्र, विकलांग श्रद्धा का दौर, वैष्णव की फिसलन, माटी कहे कुम्हार से, तुलसीदास चन्दन खीसें , मेरी श्रेष्ठ वंयग्य रचनाएँ आदि |
- **सम्पादन**- वसुधा (पत्रिका)

पुरस्कार - "विकलांग श्रद्धा का दौर" नामक निबंध संग्रह के लिए इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है |

भाषा-शैली -

परसाईजी एक सफल व्यंग्कार हैं। वे व्यंग्य के अनुरूप ही भाषा लिखने में कुशल हैं। इनकी रचनाओं में भाष के बोलचाल के शब्दों, तत्सम शब्दों तथा विदेशी भाषाओं के शब्दों का चयन भी उच्च कोटि का है। लक्षणा एवं व्यंजना के कुशल प्रयोग इनके व्यंग्य को पाठक के मन तक पहुँचाने में समर्थ रहे हैं। इनकी भाषा में यत्र-तत्र मुहावरों एवं कहावतों का प्रयोग हुआ हे, जिससे भाषा में प्रवाह आ गया है। परसाईजी की रचनाओं में व्यंग्यात्मक शैली, विवरणात्मक शैली तथा कथानक शैली के दर्शन होते हैं।

लेखक का स्थान -

परसाईजी **शक्लोत्तर युग** के हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ व्यंग्कार के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनके व्यंग्य वैयक्तिक सामाजिक एवं राजनीतिक कमजोरियो, विसंगतियों, विषमताओं, विडम्बनाओं, आडम्बरों और छल-फरेबों आदि पर करारी चोट करते हैं। आधुनिक काल में वंयग्य विधा को नयी ऊँचाइयॉ देकर उसे समृद्ध एवं प्रभवशाली बनाने वाले प्रतिष्ठित व्यंग्य-लेखक के रूप में परसाईजी को सदैव याद किया जायेगा।

----------oo----------oo----------

कुबेरनाथ राय

जीवन-परिचय- कुबेरनाथ राय का जन्म 26 मार्च 1933 को उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के मतसाँ ग्राम में हुआ। ... अपने सेवाकाल के आरम्भ में उन्होंने विक्रम विद्यालय कोलकाता में अध्यापन किया उसके बाद वे नलबारी, असम में अंग्रेजी के प्राध्यापक और सहजानन्द महाविद्यालय, गाजीपुर, उत्तर प्रदेश में प्राचार्य रहे।
मृत्यु: जून 5, 1996 (उम्र 63);

निबन्ध

- प्रिया नीलकंठी, भारतीय ज्ञानपीठ, 1969
- रस आखेटक, भारतीय ज्ञानपीठ, 1971
- गंधमादन, भारतीय ज्ञानपीठ, 1972

- निषाद बांसुरी, 1973
- विषद योग, नेशनल पब्लिशिंग हॉउस (दिल्ली), 1974
- पर्ण-मुकुट, लोक भारती (इलाहबाद), 1978.
- महाकवि की तर्जनी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस (दिली), 1979
- पत्र मणिपुतुल के नाम, गाँधी शांति प्रतिष्ठान (दिल्ली), (1980) (पुनः प्रकाशन 2004 विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी)
- मनपवन की नौका, प्रभात प्रकाशन (दिल्ली), 1983.
- किरात नदी में चन्द्रमधु, विश्वविद्यालय प्रकाशन (वाराणसी), 1983.
- दृष्टि-अभिसार, नेशनल पब्लिशिंग हाउस (दिल्ली), 1984
- त्रेता का वृहत्साम, नेशनल पब्लिशिंग हॉउस (दिल्ली), 1986.
- कामधेनु, नेशनल पब्लिशिंग हॉउस (दिल्ली), 1990.
- मराल, भारतीय ज्ञानपीठ 1993.
- आगम की नाव,
- वाणी का क्षीरसागर,
- रामायण महातीर्थम, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली 2002
- उत्तर कुरु, 1993.
- चिन्मय भारत, हिंदुस्तानी अकादमी, इलाहबाद,1996
- अन्धकार में अग्निशिखा, प्रभात प्रकाशन, 2000

काव्य

- कंथामणि (काव्य संग्रह), विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,1998

प्रमुख पुरस्कार एवं उपलब्धि

- 'कामधेनु' पर मूर्तिदेवी पुरस्कार, भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा, 1992
- प्रथम कृति 'प्रिया नीलकंठी' पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल सम्मान 1971
- 'पत्र मणिपुतुल के नाम' के लिए अभयानन्द पुरस्कार (1982)
- 'किरात नदी में चन्द्रमधु' पर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार 1987
- उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा साहित्य भूषण सम्मान 1995

विद्यानिवास मिश्र

विद्यानिवास मिश्र (28 जनवरी 1926 - 14 फ़रवरी 2005) संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान, जाने-माने भाषाविद्, हिन्दी साहित्यकार और सफल सम्पादक (नवभारत टाइम्स) थे। उन्हें सन १९९९ में भारत सरकार ने साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया था। ललित निबन्ध परम्परा में ये आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी और कुबेरनाथ राय के साथ मिलकर एक त्रयी रचते है।

प्रो॰ विद्यानिवास मिश्र स्वयं को 'भ्रमरानन्द' कहते थे और छद्य नाम से आपने अधिक लिखा है। आप हिन्दी के एक प्रतिष्ठित आलोचक एवं ललित निबन्ध लेखक हैं, साहित्य की इन दोनों ही विधाओं में आपका कोई विकल्प नहीं हैं।

श्री विद्यानिवास मिश्र की हिन्दी और अंग्रेज़ी में दो दर्ज़न से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं। इसमें "महाभारत का कव्यार्थ" और "भारतीय भाषादर्शन की पीठिका" प्रमुख हैं। ललित निबंधों में "तुम चंदन हम पानी",1957, "वसंत आ गया पर कोई उत्कंठा नहीं", 1972 और शोधग्रन्थों में "हिन्दी की शब्द संपदा" चर्चित कृतियां हैं।

रचनाएं -

- स्वरूप-विमर्श, 2001 (सांस्कृतिक पर्यालोचन से सम्बद्ध निबन्धों का संकलन)
- कितने मोरचे
- गांधी का करुण रस
- चिड़िया रैन बसेरा
- छितवन की छाँह, 1953 (निबन्ध संग्रह)
- हल्दी धूप
- कदम की फूली डाल
- आंगन का पंछी बंजारा मन
- मैंने सिल पहुंचाई
- मेरे राम का मुकुट भीग रहा है
- परंपरा बंधन नहीं
- कंटीले तारों के आरपार
- अग्निरथ (निबन्ध संग्रह)
- लागो रंग हरो (निबन्ध संग्रह)
- तुलसीदास भक्ति प्रबंध का नया उत्कर्ष
- थोड़ी सी जगह दें (घुसपैठियों पर आधारित निबन्ध)
- फागुन दुइ रे दिना, 1994
- बसन्त आ गया पर कोई उत्कण्ठा नहीं, 1972
- भारतीय संस्कृति के आधार (भारतीय संस्कृति के जीवन पर आधारित पुस्तक)
- भ्रमरानंद का पचड़ा (श्रेष्ठ कहानी-संग्रह)
- रहिमन पानी राखिए (जल पर आधारित निबन्ध)
- राधा माधव रंग रंगी (गीतगोविन्द की सरस व्याख्या)
- लोक और लोक का स्वर (लोक की भारतीय जीवनसम्मत परिभाषा और उसकी अभिव्यक्ति)
- वाचिक कविता अवधी (वाचिक अवधी कविताओं का संकलन)
- वाचिक कविता भोजपुरी
- व्यक्ति-व्यंजना (विशिष्ट व्यक्त व्यंजक निबन्ध)

- सपने कहाँ गए (स्वाधीनता संग्राम पर आधारित पुस्तक)
- साहित्य के सरोकार, 2007
- हिन्दी साहित्य का पुनरावलोकन
- हिन्दी और हम
- आज के हिन्दी कवि-अज्ञेय

पुरस्कार एवं सम्मान

- पद्मश्री -1988
- मूर्ति देवी पुरस्कार - 1989
- विश्व भारती सम्मान-1996
- साहित्य अकादमी का महत्तर सदस्यता सम्मान-1996
- पद्मभूषण - 1999
- मंगलाप्रसाद पारितोषिक - 2001
- हेडगेवार प्रज्ञा पुरस्कार
- के.के.बिड़ला फाउंडेशन के चौथी श्रेणी का सम्मान शंकर सम्मान

----------00----------00----------00----------